Date [redacted]

B.A (Hons) part-I [redacted]

Subject -- History

Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of History
S.R.A.P College Chakiya

Date - 21.02.2022

Topic :- मौर्योत्तर कालीन कला का विकास

इस काल में मूर्तिकला की तीन स्वतंत्र शैलियाँ विकसित हुई। यथा - गान्धार कला, मथुरा कला, अमरावती कला।

गान्धार कला

इसका बाह्य आवरण यूनानी और रोमन था किन्तु यह आत्मा से भारतीय ही बना रहा। यूनानी प्रभाव में मूर्तियों के निर्माण में यथार्थ चित्रण पर बल दिया गया। बुद्ध एवं बोधि-सत्वों को एक यूनानी देवता अपोलो का चित्रण किया गया। शरीर में माँसपेशियों से लेकर मूँछों तक का चित्रण किया गया।

रोमन प्रभाव:- अलंकृत साज-सज्जा पर बल दिया गया राजमुकुट के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनाए गए।

भारतीय प्रभाव:- भारतीय प्रभाव में मूर्तियों पर आध्यात्मिकता को भी दर्शाया गया है। बताया जाता है कि आगे चलकर गान्धार का कला पर मथुरा कला का भी प्रभाव पड़ा था।

क्रमिक विकास

भारत के में गान्धार कला उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला तथा आस-पास के क्षेत्रों में विकसित हुई थी। इसका आरंभिक चरण प्रथम सदी से दूसरी सदी के बीच है। फिर दूसरी-सदी से नवी सदी के बीच इसके विकास का दूसरा चरण आरंभ होता है। इसमें काली सामग्री के रूप में गहरे नीले पत्थर अथवा काले पत्थर का प्रयोग होता था।

अगर चैत्य बौद्धों का पूजा गृह था तो विहार भिक्षुकों का निवास स्थल। जहाँ - जहाँ चैत्यों का निर्माण हुआ वहाँ निवास स्थल के रूप में विहारों का भी निर्माण हुआ। विहार भी पत्थरों को काटकर निर्मित किए गए थे। किन्तु मौर्यकालीन गुफा वास्तुकला की तुलना में अधिक विकसित थे इन विहारों में बरामदे के साथ - साथ कई कमरों का भी निर्माण किया जाने लगा

गुप्तकला

गुप्तकला को मूल उत्प्रेरणा ब्राह्मण ग्रंथ से मिला। यद्यपि इस पर अन्य ग्रंथों का भी प्रभाव बना रहा। वस्तुतः इसी काल में पहली बार हिन्दु मंदिर का निर्माण किया जाने लगा तथा उनमें देवताओं की प्रतिमाएँ स्थापित की गई। ऐसा कहा जाता है कि गुप्तकाल में कला ने क्लासिकल मानदण्ड ग्रहण किए। किन्तु यह बात मूर्तिकला और चित्रकला पर लागू होती है स्थापत्य कला पर नहीं। क्योंकि इस काल में मंदिर निर्माण कला की शुरुआत हुई थी। अभी वह विकसित अवस्था में नहीं था जिसे हम स्थापत्य की नागर शैली के नाम से जानते हैं उसकी आधारशिला गुप्त काल में विकसित हुई किन्तु उसका वास्तविक विकास राजपूत काल में देखा गया।

B.A (Hons) part [illegible]

Date
[illegible].2021

Subject - History
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of History
S.R.A.P College Chakiya

Date - 22.02.2021

प्र० मुहम्मद-बिन-तुगलक भारतीय इतिहास में एक विफल शासक के रूप में जाना जाता है लेकिन उसका शासनकाल महज एक विफलता की कहानी नहीं है।

उत्तर मो० बिन-तुगलक भारतीय इतिहास में एक असफल शासक के रूप में जाना जाता है। जैसा कि हम देखते है कि वह अपने साम्राज्य की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण नहीं रख सका। उसके जीवन काल में ही उसके साम्राज्य की एकता और अखंडता छिन्न-भिन्न हो गयी। फिर उसके प्रयोगों की विफलता ने उमरा वर्ग, उलेमा वर्ग एवं जनसामान्य के बीच एक प्रतिक्रिया उत्पन्न की जिसका सामना उसके उत्तराधिकारी फिरोजशाह तुगलक का काल महज असफलता की कहानी नहीं है बल्कि कई बातों में यह काल नवीन संभावनाओं से परिपूर्ण दिखता है।

(1) अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना तथा उत्तर दक्षिण के बीच बेहतर सांस्कृतिक एकीकरण

(2) प्रशासनिक केन्द्रीकरण

(3) प्रथम ऐसा शासक जिसने उत्पादन वृद्धि के माध्यम से राजकीय आमदनी में वृद्धि का प्रयास।

(4) राजनीति से धर्म को पृथक्करण किया जाये यह प्रक्रिया अकबर के समय में जारी रहा।

(5) समन्वित संस्कृति को प्रोत्साहन दिया जाये अकबर के काल में भी यह जारी रहा।

(6) स्थापत्य में मेहराबी तथा शहतीरी शैली के बीच बेहतर समन्वय। मो० बिन-तुगलक के काल के स्थापत्य में चतुष्कोणीय मेहराब का प्रयोग हुआ फिर इसी पद्धति का प्रयोग अकबर ने फतेहपुर सिकरी के निर्माण